शिक्षण विधियाँ

• उपचारात्मक-शिक्षणम्

- परिभाषा
- क्षेत्र
- उद्देश्य
- विधियाँ
- महत्व
- उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया

उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ –

शिक्षा जगत में **उपचारात्मक शब्द** चिकित्सा शास्त्र से लिया गया है, जिस प्रकार एक डॉक्टर विभिन्न परीक्षणों के द्वारा रोगी के रोग का कारण का पता लगाकर उसकी उचित चिकित्सा करता है। ठीक उसी प्रकार **एक कुशल शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियों तथा प्रविधि, परीक्षणों, निरीक्षण वा वार्तालाप के आधार पर शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े व कमजोर बच्चों की कठिनाइयों का पता लगाकर उसको उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा कठिनाइयों को दुर करके विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता में वृद्धि करता है सामान्य बालकों की श्रेणी में लाने का प्रयास करता है ।**

उपचारात्मक शिक्षण की परिभाषा

- **योकम व सिम्पसन अनुसार उपचारात्मक शिक्षण की परिभाषा**

“उपचारात्मक शिक्षण उस विधि को खोजने का प्रयत्न करता है, जो छात्र को अपनी कुशलता या विचार की त्रुटियों को दूर करने में सफलता प्रदान करें।”

- *पहले प्रत्येक छात्र को समान समझ कर छात्रों की प्रगति पर ध्यान दिए बिना शिक्षा दी जाती थी। जिससे कुछ विद्यार्थी प्रगति कर लेते थे और कुछ पिछड़ जाते थे। इन पिछड़े विद्यार्थियों की उपेक्षा की जाती थी। मनोविज्ञान के अनुसार सभी विद्यार्थियों के सीखने और समझने की शक्ति एक समान नहीं होती। नवीन शिक्षा पद्धति में इन विद्यार्थियों के सीखने में होने वाली कठिनाईयों का पता लगाने की प्रक्रिया* ***‘निदानात्मक’*** *शिक्षण के नाम से जानी जाती है। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए किया जाने वाला शिक्षण* ***‘उपचारात्मक शिक्षण’*** *है।*

उपचारात्मक शिक्षण तथा इसका महत्व

- निदानात्मक शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों को सीखने में आने वाली कठिनाइयों का पता चल जाता है।
- उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा उन कठिनाईयों को दूर करके विद्यार्थी के व्यक्तिगत विकास को बल दिया जाता है।
- छात्रों की हीन भावना दूर करने में उपचारात्मक शिक्षण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।
- 'उपचारात्मक शिक्षण' शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में सहायक होता है ।
- उपचारात्मक शिक्षण अच्छे शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य

- छात्रों की अधिगम सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करना।
- छात्रों की ज्ञान सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करके , उनको आने वाले समय मे होने वाले दोषो से मुक्त करना।
- छात्रों के दोषपूर्ण आदतों,मनोवृत्तियों को समाप्त करके उनकी अच्छी आदतों को सीखना।
- छात्रों को उन अच्छी आदतों को सीखना जो आज तक सीखी नही गयी है।
- उत्तम भाषा प्रयोग की क्षमता प्रदान करना।
- समय एवं शक्ति का संरक्षण।
- मंदबुद्धि बालकों में आत्मविश्वास बढ़ाना।
- संस्कृत भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर पाठन।

उपचारात्मक विधियाँ / उपाय

1 . छात्रों की त्रुटियों को यदा - कदा सही करना।

2 . छात्र के अधिगम संबंधी दोषों का व्यक्तिगत रूप से अध्ययन कर, उनको दूर करने का उपाय बताना।

3 . व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर समूह में विभाजित कर शिक्षण की व्यवस्था करना।

4 . आवश्यकतानुसार शिक्षा देना।

5 . अधिगम संबंधी दोष, कमजोरियों और बुरी आदतों का निदान करना।

उपचारात्मक शिक्षण के क्षेत्र

1 . वाचन या पाठन

2 . लेखन

3 . उच्चारण

4 . भाषा या व्याकरण

5 . अङ्कगणित

उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया

1 . प्रत्येक छात्र के स्तर के अनुसार उपचारात्मक शिक्षण करना चाहिए।

2 . प्रत्येक सप्ताह छात्र की प्रगति की जाँच होनी चाहिए।

3 . छात्र में यदि दोष दिखाई दे तो उन्हें प्रदर्शित नहीं करना चाहिए , क्योंकि इससे हीन भावना जागृत होती है। उसकी हीनभावना का प्रभाव उसके अधिगम पर पड़ेगा।

उपचारात्मक शिक्षण निर्माण प्रक्रिया

Sky Educare

1 . निदानात्मक परीक्षणों में छात्रों के द्वारा की गई त्रुटियों का विश्लेषण अवश्य करना चाहिए।

2 . त्रुटियों के आधार पर अलग - अलग अभ्यासों का निर्माण करना | चाहिए।

3 . विशेष सामग्री के आधार पर त्रुटियों के प्रकार एवं उनके कारण जानने चाहिए।

4 . अध्ययन के अनुसार ही अभ्यास - माला का निर्माण होना चाहिए।

5 . एक ही प्रकार की त्रुटि के लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास प्रश्न होने चाहिए।